देश जो मज़दूरों के लिए नहीं: कोरोना की दूसरी लहर, स्थानीय लॉक डाउन, प्रतिपात में मज़दूर

Stranded Workers Action Network द्वारा एक रिपोर्ट

16th June 2021

कोरोना की दूसरी लहर के प्रतिपात के साथ, देश के 92% कामगार लोग (जिन तक सामाजिक सुरक्षा तंत्र के पहुंच की सख्त कमी है) अभूतपूर्व समस्या से जूझ रहे हैं । एक साल में दूसरी बार देश को अलग-अलग प्रकार के लॉक डाउन का सामना करना पड़ा, और आर्थिक गतिविधियों पर रोक लगने की वजह से प्रवासी मज़दूर व असंगठित छेत्र के श्रमिक इससे सबसे ज़्यादा प्रभावित हुए हैं। (Stranded Workers Action Network (SWAN) अथवा स्वान, प्रवासी मज़दूरों के लिए एक स्वंयसेवक दल है, जो पिछले साल जुटकर प्रवासी मज़दूरों तक सहायता पहुंचने का काम कर रहा था। विभिन्न राज्य स्तरीय लॉक डाउन की वजह से इस साल भी प्रवासी मज़दूरों पर भारी असर पड़ा है। बढ़ती परेशानियों को मध्यनज़र रखते हुए, स्वान ने इस साल भी 21 अप्रैल 2021 से हेल्पलाइन फिर से शुरू की। हमें समझ आया कि यातनाओं के आयाम लगभग पिछले साल जैसे ही हैं, लेकिन समस्याएं कुछ अलग इस वजह से हैं क्योंकि इस बार लोगों की आर्थिक स्थिति पहले से ज़्यादा कमज़ोर है और सामाजिक सुरक्षा तंत्र की पहुंच में कमी होना हालत को और मुश्किल बना देता है।

केंद्र सरकार की प्रतिक्रिया चिंताजनक इसलिए भी है क्योंकि वो ज़िम्मेदारी से पल्ला झाड़कर इस उम्मीद में हैं कि जवाब केवल राज्य देगी। अभी तक किसी भी तरह की नीतियों का सुझाव या बजटीय विस्तार नहीं किया गया है जिससे प्रवासी मज़दूरों तक राहत पहुंचे। क्राउड फंडिंग के माध्यम से हमने 33 लाख रुपये इखट्टा करके मज़दूरों को उस राशि से जोड़ा। लगभग 8,000 मज़दूरों और उनके परवीरों से संपर्क करके हमें उनकी विविध समस्याओं के बारे में पता चला, जैसे - राशन व खाने की कमी, स्वास्थ सेवा की कमी, आमदनी में गिरावट, ऋण की बढ़ौतरी, शहर में रहने के अन्य संघर्ष और साथ ही घर वापिस लौटने से जुड़ी यातनाएं।

मज़दूरों की समस्याओं और उनके संघर्ष का उल्लेख करते हुए हमने एक रिपोर्ट तैयार किया है'. इसके अलावा इस रिपोर्ट में केंद्र सरकार की अपपरयप्त प्रतिकिर्या व् न्यायालयों की प्रतिकिया का भी उल्लेख है। आप स्वान की अंग्रेजी में लिखी हुई पूरी रिपोर्ट को यहाँ पढ़ सकते हैं: Full English Report

जहाँ हमने केंद्र सरकार की कमज़ोर प्रतिक्रिया की वजह से, कुछ सुझाव दिए हैं - इनमें से कई सुझाव संरेखित हैं उन मांगों के जिन्हें मज़दूर संघ, नागरिक समाज संगठन, श्रम विशेषज्ञ, निति विशेषज्ञ और शैक्षिक, काफी समय से मांग कर रहे हैं। इन मांगों की सूची तक हम सभी विशेषज्ञों से बातचीत और विमर्श के बाद पहुंचे हैं।

- FCI के गोदाम में 100 मिलियन टन का खाद्य सामग्री उपलब्ध है जो की साधारण परिमाण से ३ गुना ज़्यादा है। राशन के लिए राशन कार्ड अनिवार्य न हो।तात्कालिक सार्वजर्वनिक वितरण प्रणाली (पी.डी.एस) का सार्वभौर्वमिकरण किया जाए और 5 किलो अतिरिक्त प्रति व्यक्ति खाद्यान्न, 1.5 किलो दाल और 800 ग्राम खाने का तले भी बढ़ोतरी के साथ दिया जाए
- 6 महीनों के लिए असंगठित श्रमिकों को 3000 रुपये प्रति माह दिया जाय। इसे wage compensation के तौर पे माना जाय। अनुमान हे की यह 2021-22 के सकल घरेलु उत्पाद (GDP) का 1.97% ही होगा।
- ग्रामीण क्षेत्र में हर घर को नरेगा के तहत 150 दिन का काम उपलब्ध हो।
- शहरी रोज़गार के लिए केंद्र सरकार को योजना की तैयारी करनी चाहिए।

यह सुझाव उस समूह के लिए है जिनको इस महामारी ने बेढंगे तौर से प्रभावित किया है। यह लेख अंग्रेज़ी में छपी रिपोर्ट काएक छोटा सार है। एक प्रकार से देखा जाए तो यह रिपोर्ट मज़दूरों की ज़ुबानी केंद्र सरकार का ऑडिट माना जा सकता है। रिपोर्ट के कुछ मुख्या आंकड़े प्रस्तुत हैं:

प्रवासी मज़दूरों की आपदा का 8 ग्राफ में रेखांकन

1. प्रवासी मज़दूर और व्याप्ति: स्वान अभी तक 1396 मज़दूर समूह से जुड़ें हैं जो कुल मिलाकर 8023 लोग हैं, जिनमें से 4836 औरतें और बच्चे थे जो उन समूह के साथ थे।

राज्य-दर-राज्य का डाटा

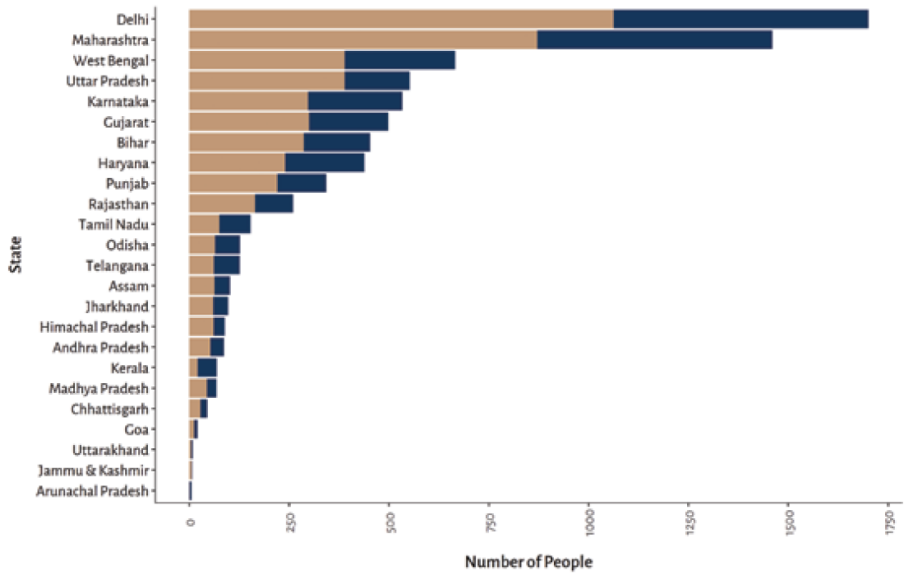

2. स्वान के पास आये फ़ोन संख्या का डाटा

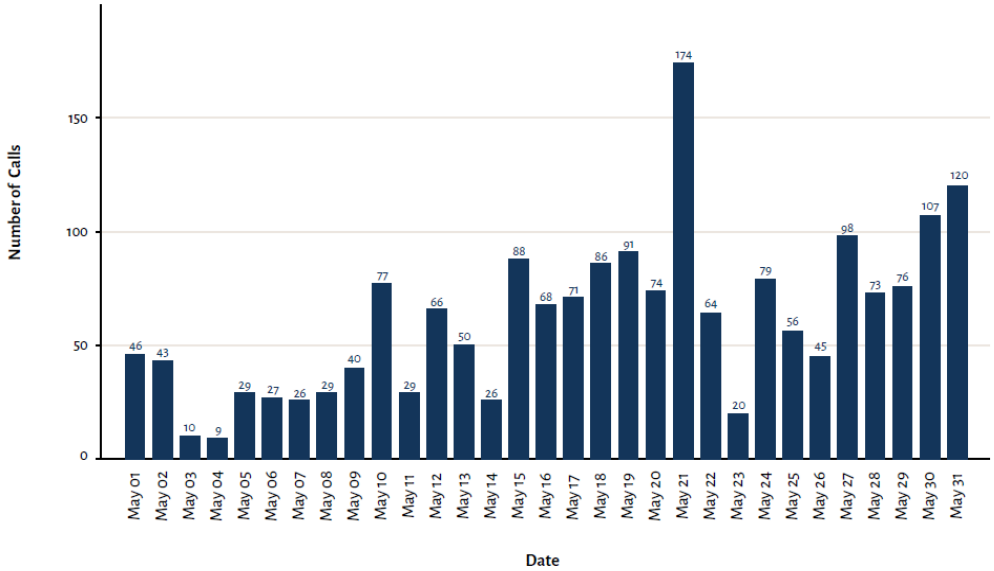

3. आये हुए **1370** फ़ोन कॉल **(**या **7918** लोग प्रभावित**)** में से अत्यावश्यक कॉल **(SOS)** की संख्या जिनके पास न पैसे न राशन था

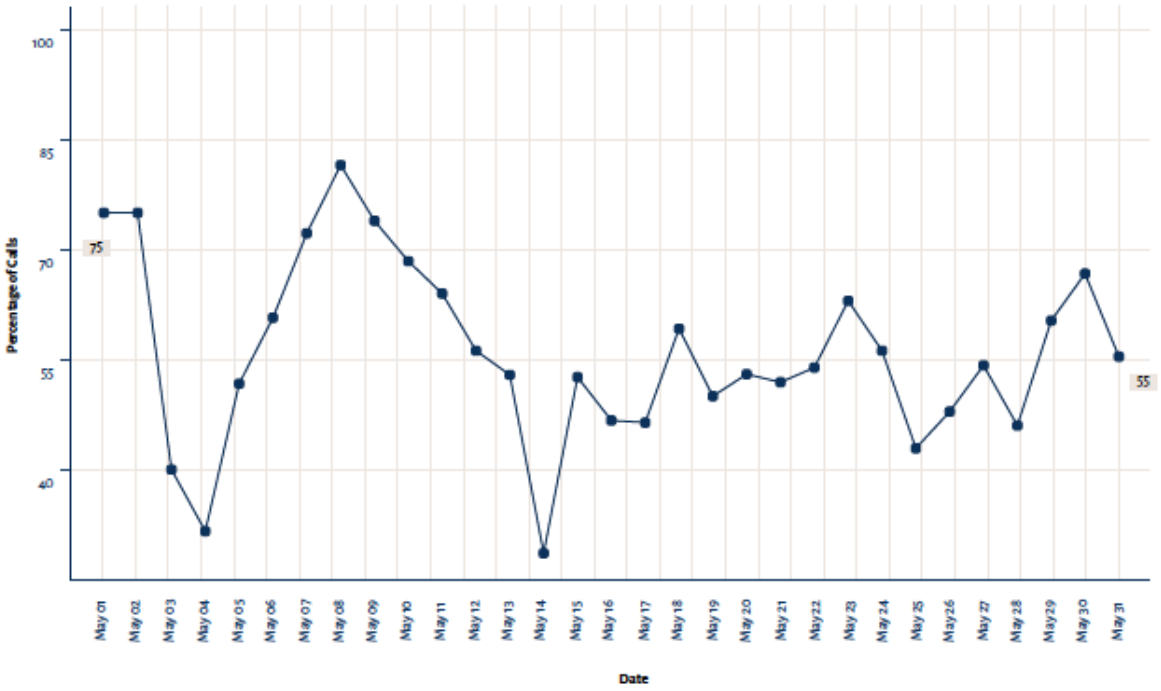

4. आये हुए **1370** फ़ोन कॉल **(**या **7918** लोग प्रभावित**), 76%** लोगों ने फ़ोन करते वक़्त बताया कि उनके पास **200** या उससे कम रुपये बचे हैं।

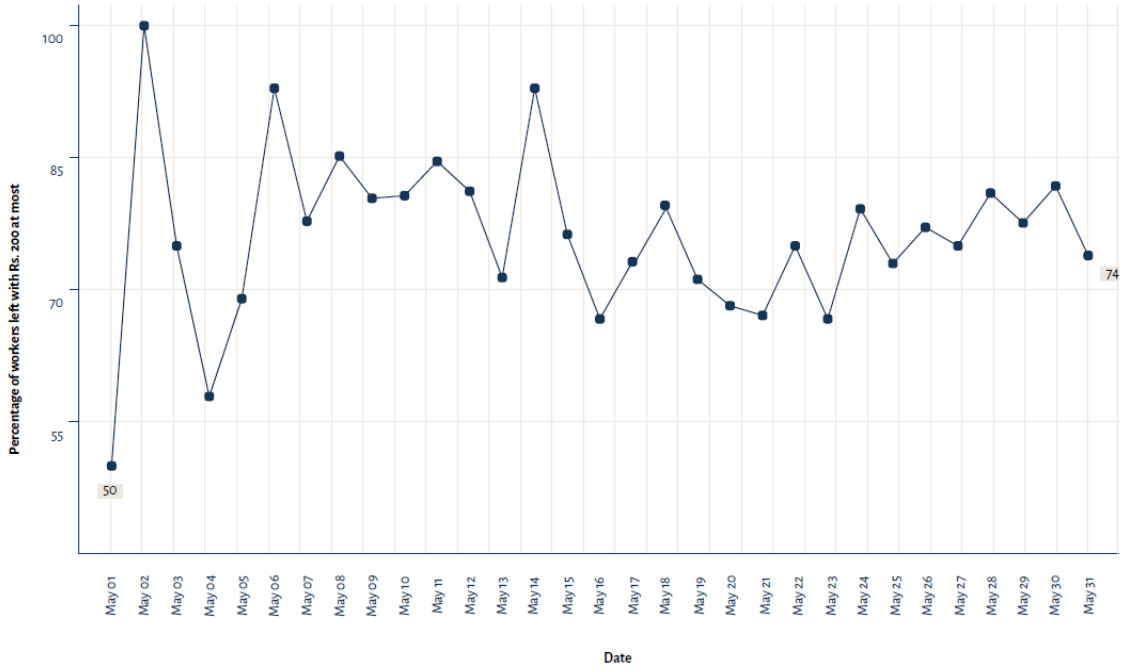

5. हमसे जुड़ने वाले मज़दूरों में से **82%** के पास **2** दिन या उससे कम का राशन था।

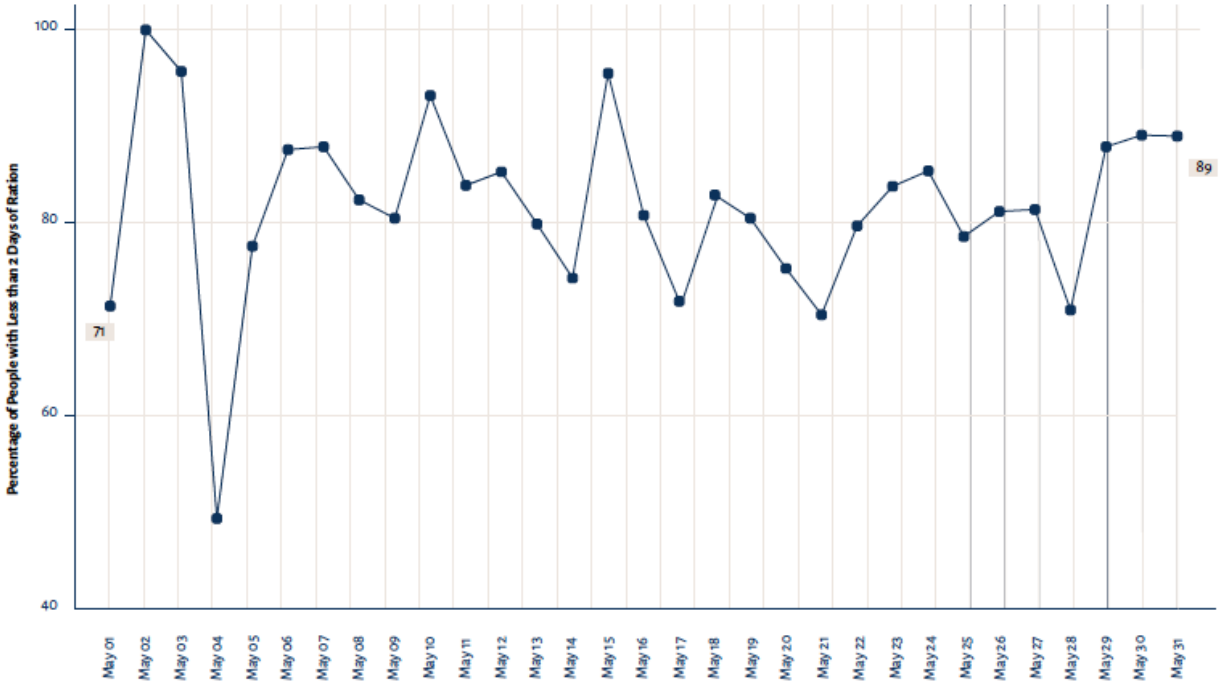

5. बाधित रोज़गार और वेतन: हम तक पहुंचने वाले मज़दूरों की दैनिक वेतन की माध्यिका 308 रुपये थी। 91% मज़दूरों ने हमें बताया कि लॉक डाउन घोषित होने के बाद काम रुक गया है, और पैसे की कमी होने के साथ, कई परेशानियां सामने आ रही हैं। फ़ोन करने वालों में से 60% दैनिक वेतन पर काम करते थे, 6% लोग घरेलु काम या ड्राइवर जैसे काम कर रहे थे, और 16% स्वनियोजित थे।

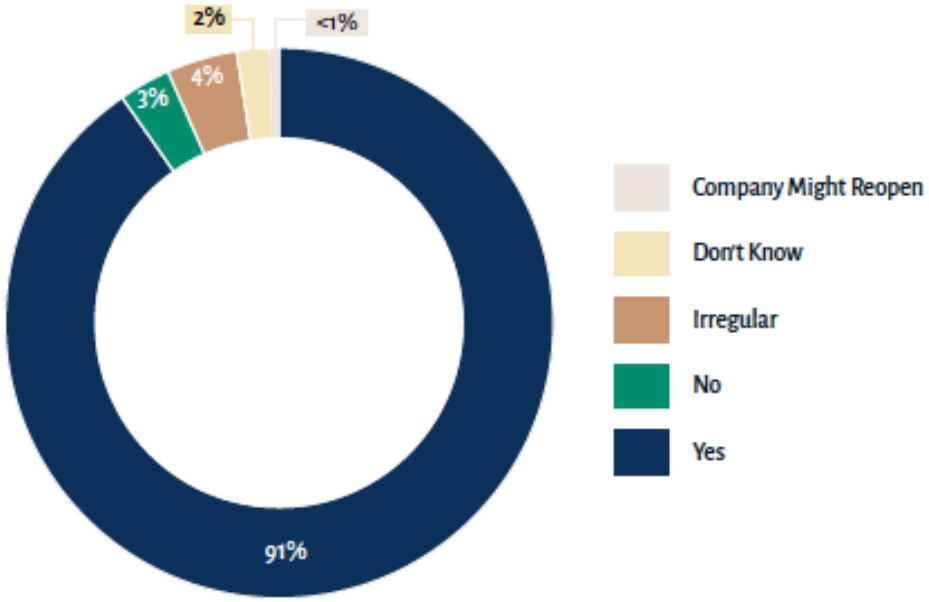

6. काम की कमी (घर और बाहर)**:** काम न होने के वावजूद प्रवासी मज़दूर वापिस घर जाने में भी झिझक रहे हैं क्योंकि घर पर भी काम मिलने के अवसरों की सख्त कमी है - नरेगा में काम मिलना भी मुश्किल साबित हुआ है। 34% मज़दूरों को अपने काम किये के पैसे नहीं मिले थे, और 13% को उनकी आमदनी का कुछ ही हिस्सा मिला था। 999 मज़दूर जिन्होंने जवाब दिया, उनके काम रुकने का डाटा:

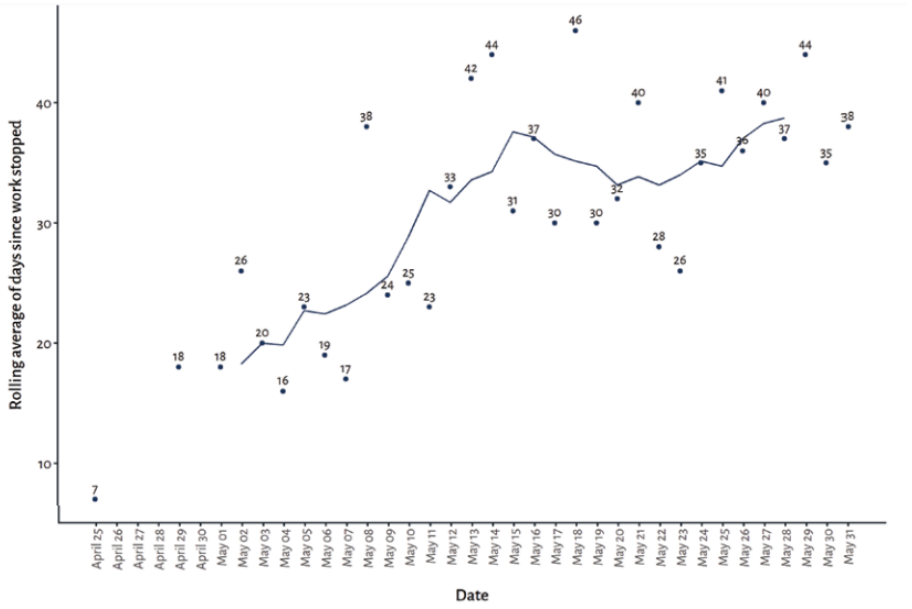

7. पैसे न मिलने का डाटा

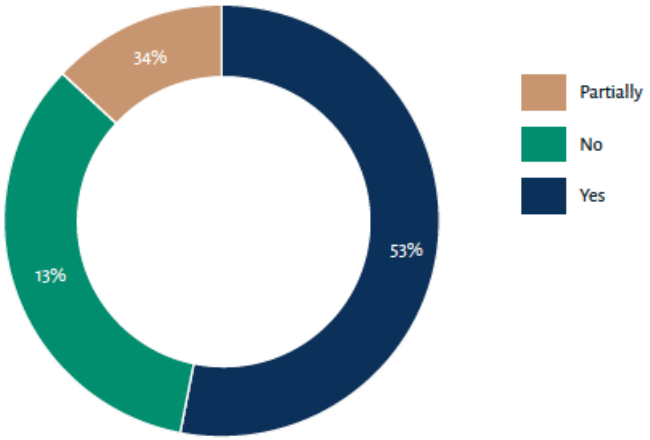

अतिरिक्त जानकारी के लिए संपर्क करें**: Anindita Adhikari** (9871832323, aninditaadhikari@gmail.com), **Zil Gala** (9867920264, zilgala8@gmail.com), **Anushka Kale** (7619404770, anushkaskale@gmail.com), **Nitish Kumar** (8800725131, nitishdav12b@gmail.com), **Seema Mundoli** (9449818468, seema.mundoli@gmail.com) **Rajendran Narayanan** (9620318492, n.rajendran@gmail.com), **Khanjan Ravani** (khanjan.r@gmail.com)**, Gayatri Sahgal** (8527907633, gayatrisahgal@gmail.com), **Tarangini Sriraman** (9971029723,tarangini.sriraman@gmail.com) and **Nitya Vasudevan** (nitya.vasudevan@gmail.com).